International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
Volume 4, Issue 4, April 2017 Impact Factor- 5.414,
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
© Associated Asia Research Foundation (AARF) Publication
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

वर्तमान संदर्भ में गांधी सत्याग्रह की प्रसं गकता : एक अनुशीलन

अशोक कुमार
शोध- छात्र, इतिहास वभाग, मगध वश्व वदयालय, बोधगया

शोध-सार :

प्रस्तुत शोध पत्र वर्तमान संदर्भ में गाँधी के सत्याग्रह की प्रासं गकता : एक अनुशीलन पर आधारित है। सत्याग्रह गांधीजी के दर्शन में एक प्रमुख और महत्वपूर्ण अवधारणा है। उनकी सत्याग्रह अवधारणा को इस तथ्य के साथ श्रेय दिया गया क भारत ब्रिटिश साम्राज्यवाद से स्वतंत्र हो गया और लोकतंत्र स्वतंत्र भारत में जी वत और वक सत हुआ। क्यों क सत्याग्रह ने देश में एक नई चेतना पैदा की। साधारण लोग, समाज की स्थिति के प्रति उदासीन, सरकार को निडर होकर चुनौती देने लगे। उसे वश्वास हो गया क हम बिना ह थयार के कसी भी शक्तिशाली शक्ति को वश में कर सकते हैं। उन्हें अपने अ धकारों को पाने और अपने साथ हुए अन्याय के खलाफ लड़ने के लए ऊर्जा मली। सार्वजनिक मामलों में उनकी भागीदारी बढ़ी। उनकी आत्माएं जाग उठीं। सत्याग्रह के रूप में, एक ओर मा. गांधी ने युद्ध हिंसा का वकल्प दिया और दूसरी ओर न केवल भारत में बल्कि पूरे वश्व में शो षत, उत्पी ड़त, पछड़े, दुखी और कमजोर लोगों के हाथों में अन्याय के खलाफ लड़ने के लए एक तेज और चमकदार ह थयार दिया। सत्याग्रह क्रूरता की शक्ति को कम करता है और अन्याय से लड़ने के लए आम आदमी की शक्ति को बढ़ाता है। सत्याग्रह में व्यक्तिगत, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं को हल करने की अव्यक्त शक्ति है। सत्याग्रह कसी भी मतभेद और ववाद को हल कर सकता है। इस लए, एम। गांधी ने कसी समस्या या समस्या को हल करने के लए सत्याग्रह को महत्वपूर्ण बताया। इस संदर्भ में, वे कहते हैं, "सत्याग्रह कुंजी है। शल्पकारों ने हाल ही में एक प्रकार की कुंजी बनाई है जो सभी प्रकार के तालों पर चलती है। वे इसे 'मास्टर कुंजी' कहते हैं। इसके अलावा, 'सत्याग्रह' हमारी असंख्य आपदाओं की कुंजी है।" प्रस्तुत शोध पत्र वर्तमान संदर्भ में गाँधी के सत्याग्रह की प्रासं गकता का अध्ययन करने हेतू लखा गया है।

शब्द कुंजी : सत्याग्रह, अहिंसा, उपवास, हड़ताल, प्रतिकार।

अनुसंधान निबंधों के लए प्रयुक्त अनुसंधान व धयाँ:

वर्तमान शोध प्रबंध के लए उपयोग की जाने वाली जानकारी और तथ्यों को वषय से संब धत व भन्न पुस्तकों, पत्रिकाओं, लेखों, समाचार पत्रों और वेबसाइटों से संक लत कया गया है।

अनुसंधान के उद्देश्य:

प्रस्तुत शोध के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं।

1) वर्तमान संदर्भ में गाँधी के सत्याग्रह की प्रासं गकता का अध्ययन करना.
2) सत्याग्रह से संबन्धित मा. गाँधी के वचारोका अध्ययन करना.
3) सत्याग्रह के लए आवश्यक पात्रता एवं नियमोके बारेमे जानना.
4) अनुसंधान से प्राप्त जानकारी के आधार पर मानव समाज के वकास में सुधार के लए सुझाव देना।

अनुसंधान की आवश्यकता और महत्व:

गांधीवाद एक स्वतंत्र वचारधारा है। सोचने का यह तरीका अध्यात्मवाद पर आधारित है। वास्तव में, यह एक प्रकार का अध्यात्मवाद है। गांधीवाद जैसी कोई चीज नहीं है, यह जीवन का एक तरीका है, जैसा क कई गांधीवादी कहते हैं, या यहां तक क गांधी ने भी खुद ऐसा कहा है, ले कन यह गांधी द्वारा अपने वपुल लेखन में व्यक्त कए गए वचार का एक स्वतंत्र तरीका है, इसे साकार कए बिना। आधुनिक दुनिया की सामाजिक और राजनीतिक वचारधाराओं पर इसका प्रभाव कसी का ध्यान नहीं गया है।

हालाँ क गांधी स्वयं एक क र हिंदू थे, उनका मानना था क सद्धांत रूप में धर्म के संदर्भ में दुनिया के प्र सद्ध धर्मों के बीच एक मौ लक एकता थी, और उन्होंने महसूस कया क उन्हें दुनिया के सभी धर्मों के बारे में रहस्य जानने को मला था। गांधी ने अहिंसा और सत्य के इस सद्धांत को बड़ी निष्ठा के साथ राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्रों में लाया। इसे सत्याग्रह कहा जाता है। शुद्ध साधना के लए केवल शुद्ध साधन ही उपयोगी होते हैं। यदि शुद्ध साधना के लए अशुद्ध साधनों का उपयोग कया जाता है, तो साधना भी अशुद्ध हो जाती है। साधना दूर हो जाती है। सत्याग्रह शुद्ध साधना है। सत्याग्रह का अर्थ है सत्य के लए अहिंसा के माध्यम से असत्य का वरोध करना। ववेकानंद ने तर्क दिया था क हर इंसान की आत्मा धर्म की परवाह कए बिना सच्चाई है। उसी वचार को आगे बढ़ाते हुए, गांधी ने इसी आधार पर सत्याग्रह के वचार का प्रस्ताव रखा। बुरी इच्छाओं के कारण मानव शरीर में प्रदूषण को कम करने के लए सत्याग्रह का वचार आज भी उतना ही प्रासं गक है। इस शोध पत्र में शोध का वषय इसी लए महत्वपूर्ण है।

सत्याग्रह का अर्थ:

गांधी ने भारतीय स्वतंत्रता प्राप्त करने के लए अहिंसा और सत्याग्रह का रास्ता अपनाया। अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम, फ्रांसीसी क्रांति और 1917 की रूसी क्रांति सभी हिंसक थे। ले कन गांधीवादी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम अहिंसक था। उन्होंने द क्षण अफ्रीका में हिंदी लोगों के संघर्ष को क्या कहा जाए, इस वचार से सत्याग्रह शब्द बनाया। 'इं डयन ओ पनियन' के पाठकों के लए, 'लड़ाई' के लए एक अलग शब्द सुझाने की होड़ थी। उस प्रतियो गता से, 'सदाग्रह' शब्द गढ़ा गया था। उसी से 'सत्याग्रह' शब्द का निर्माण हुआ।

सत्याग्रह शब्द नागरिक प्रतिरोध की तुलना में गांधी के लए अ धक उपयोगी था। प्रतिरोध से घृणा होने की संभावना है। स्थिति से प्रतिरोध हिंसक हो सकता है। ले कन सत्याग्रह में अहिंसा है। गांधी के अनुसार सत्याग्रह का अर्थ है सत्यता। यानी सच्चाई से चपटना है। सत्याग्रह सत्य, आत्मबल की शक्ति है। गांधीजी सत्याग्रह को प्रेम की शक्ति कहते हैं। क्यों क सत्याग्रही गलत करने वाले को सुधार सकते हैं। सत्याग्रही अहिंसक और निडर होते हैं।

वर्तमान संदर्भ में गांधी सत्याग्रह की प्रसं गकता :

इक्कीसवीं सदी में, जब राजनीतिक और सामाजिक वचार सामूहिक कार्रवाई के वचार से रहित थे, मा. गांधी ने सत्याग्रह की अवधारणा को अपनी संपूर्णता में प्रस्तुत करके इस वचार का दुनिया को एक अमूल्य उपहार दिया है। सत्याग्रह समस्या को हल करने के लए एक बहुत ही सरल और प्रभावी तकनीक है। आज के सत्याग्रह के वकृत

रूप से बचने और व भन्न समस्याओं को हल करने के लए, कार्यकर्ताओं का एक कैडर बनाने की तत्काल आवश्यकता है जो सत्याग्रह के उनके दृष्टिकोण को समझते हो और उसका उपयोग करते हो। इस लए, मा. गांधीजी के सत्याग्रह की अवधारणा के व भन्न पहलुओं की सं क्षप्त व्याख्या करने की जरूरत आज है।

गांधीजी ने अहिंसा को एक महत्वपूर्ण स्थान दिया। उनके वचार अनुसार, अपने आप को या अपने अस्तित्व को बचाने के लए, वरो धयों पर सैनिकों का घातक हमला हिंसा नहीं हो सकता। अहिंसा की शक्ति अपार है। यह स्वयं को बाहरी आक्रमण से बचाता है। धैर्य, संयम, धीरज आदि यह अहिंसा की शक्ति है। अहिंसक कसी भी वपरीत साम्राज्य-शक्ति को गुणों के सत्याग्रह माध्यम से वश में कर सकता है। सत्याग्रह मे बदला लेने के लए कोई जगह नहीं है। गांधीजी का सत्याग्रह का वचार न केवल भारत के लए बल्कि पूरे वश्व के लए एक महत्वपूर्ण उपहार है। यह राजनीतिक वचार और व्यवहार का एक सुंदर संगम है। इस वचारका उन्होने अफ्रीका मे प्रयोग कया। परिणामस्वरूप, अन्यायपूर्ण भारतीयों को इसका लाभ हुआ । सत्याग्रह सत्य का आग्रह है।

गांधीजी के वचार में सत्याग्रह का बहुत महत्वपूर्ण स्थान था। सत्याग्रह में, सत्य को अन्य सभी से ऊपर स्वीकार करना आवश्यक है। इस लए यहा हिंसा के लए कोई जगह नहीं है। सत्याग्रही स्वयं कष्ट सहकर वपक्ष का दिल बदलने की को शश करता हैं। सत्याग्रह का वचार पुराना है। इसके पहले भारतीय जीवन में इसके उपयोग के कई उदाहरण हैं। गांधीजी ने उन्हें राजनीति के बीच स्था पत करने के लए अथक प्रयास कया। सत्याग्रह राजनीतिक वातावरण में अन्याय, उत्पीड़न और शोषण के खलाफ लड़ाई है। इससे, कदाचार को दूर कया जा सकता है। कमजोर ताकत से प्रेरित होते हैं। केवल इसके लए खुद को तैयार करना आवश्यक है। । अफ्रीका में सत्याग्रह के सफल प्रयोग के बाद, गांधीजी ने इसे भारत में लागू करने की पूरी को शश की। सत्याग्रह निहत्थे प्रतिरोध से अलग है। सत्याग्रह और निहत्था प्रतिरोध एक ही बात लगती है, ले कन दोनों के बीच एक बड़ा अंतर है। सत्याग्रह का वशुद्ध रूप से नैतिक आधार है। निहत्थे प्रतिरोध की प्रकृति राजनीतिक है। सत्याग्रह के लए ताकत चाहिए। निहत्था प्रतिरोध कमजोरों का ह थयार है। सत्याग्रह का संबंध आंतरिक / हार्दिक है। निहत्थे प्रतिरोध का रिश्ता बाहरी है। यह केवल शारीरिक गति व ध के माध्यम से दिखाई देता है। सत्याग्रह में हृदय को बदलने की शक्ति है, इस लए यह निहत्थे प्रतिरोध से बेहतर है। सत्याग्रह से प्यार का माहौल है। इस बात की कोई गारंटी नहीं है क निहत्थे प्रतिरोध में ऐसा ही होगा। सत्याग्रह में बिना मारे मरने की ताकत है। निहत्थे प्रतिरोध में, प्रतिद्वंद्वी को परेशान करने और उसे कगार पर लाने का प्रयास कया जाता है। दोनों सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन लाते हैं। एक सच्चे सत्याग्रह की मृत्यु भी जीत का अग्रदूत है। ईसा मसीहा की मृत्यु के बाद, अरबों लोग उनके अनुयायी बन गए। इस लए, यह देखना आसान है क सत्याग्रह का स्थान अद्वतीय है। गांधी ने सत्याग्रह को राजनीति में शा मल करके प्राचीन भारतीय आयाम से जीवन का नया राजनीतिक तरीका पेश कया। देश मे अभी भी अलग-अलग जगहों पर सत्याग्रह देखा जाता है। इस लए आज की पीढ़ी को गांधी जी के सत्याग्रह के वचार को समझने की जरूरत है।

गांधीजी शासकों के अत्याचार से कमजोर लोगों को मुक्त करना चाहते थे। यह कहा जा सकता है क गांधीजीने जनता को मजबूत शक्ति को चुनौती देने के लए प्रेरित करने के लए सत्याग्रह तकनीक का उपयोग कया है। निश्चित रूप से, सत्याग्रह को अ धक से अ धक शुद्ध और सफल बनाने के लए, यह महत्वपूर्ण है क सत्याग्रही भी अहिंसक हो। यदि आप इसमें सच्चे सत्याग्रहियों पर एक नज़र डालते हैं, तो आपको सत्याग्रही निम्न ल खत गुण वशेषताएं मलेंगी

एक सत्याग्रही को ईश्वर में वश्वास होना चाहिए। इससे उसे प्रतिकूलता सहने की स्वाभा वक शक्ति मलती है। सत्याग्रही को धन और प्र स द्ध की लालसा नहीं रखनी चाहिए। वह स्वस्थ होना चाहिए। उसके पास कायरता नहीं होनी चाहिए। वह उद्देश्यपूर्ण होना चाहिए। उसे घृणा, क्रोध, घृणा, लोभ, मोह के अधीन नहीं होना चाहिए। उसे स्वार्थ स द्ध के

लए सत्याग्रह का प्रयोग नहीं करना चाहिए। उसे अपने वरो धयों के लए प्यार और सम्मान होना चाहिए। उसे लाचारी से समझौता नहीं करना चाहिए। जब वपक्ष संकट में हो तो सत्याग्रह नहीं कया जाना चाहिए।

इस प्रकार गांधीजी ने सत्याग्रह के लए शुद्ध आचरण के नियम निर्धारित कए हैं। सत्याग्रही कसी भी परिस्थिति में हिंसा का उपयोग नहीं कर सकते। वह प्यार से हिंसा पर काबू पाना चाहते थे। अंतिम निर्वाण के समाधान के रूप में सत्याग्रह का मार्ग अपनाना चाहिए। तुच्छ कारणों से सत्याग्रह का उपयोग नहीं कया जाना चाहिए। गांधीजी ने सत्याग्रह के उपकरणों (तकनीकों) का उपयोग कया था जिसमें असहयोग एक तकनीक थी। गांधी के अनुसार, उत्पीड़न और शोषण शो षतों के इच्छुक या अनिच्छुक सहयोग का परिणाम है। जनता के सहयोग से ही शासक शोषण कर सकते हैं। केवल लोगों के सहयोग से अत्याचारी शासक के शासन को समाप्त कर सकते हैं। मूल रूप से राज्य का आधार लोगों की इच्छा है। यदि जनता असहयोग का आह्वान करती है तो कोई साम्राज्य जी वत नहीं रह सकता है। गांधीजी ने **1930-31** की अव ध के दौरान भारत में स वनय अवज्ञा की तकनीक को अपनाया। यदि शासक वसीयत की अवहेलना कर रहे हैं, तो उस राज्य के कानूनों का पालन करने वाले लोगों का कोई सवाल ही नहीं है। नागरिक कानून का उल्लंघन करते हुए जनहित को नुकसान न पहुंचे, इसका ख्याल रखा जाना चाहिए। अहिंसक साधनों के माध्यम से कानून का उल्लंघन भी कया जाना चाहिए। उनका मत था क कानून तोड़ते समय शासकों के उत्पीड़न को सहने के लए उन्हें तैयार रहना चाहिए।

समाजवादी या साम्यवादी हड़ताल के बजाय। गांधीजी की हड़ताल की अवधारणा अलग है। कसी को भी हड़ताल करने के लए मजबूर नहीं कया जाना चाहिए। आंतरिक वरोध के कारण सत्याग्रहियों ने काम करना बंद कर दिया। हड़ताल और हिंसा नहीं होनी चाहिए। हड़ताल की पृष्ठभू म स्पष्ट रूप से सभी को समझाई जानी चाहिए। उसे केवल हड़ताल के लए उठाए गए फंड पर नजर नहीं रखनी चाहिए। हड़ताल दिनचर्या का वषय नहीं होना चाहिए। अन्यथा इसका महत्व नहीं रहता। केवल अपनी न्यायिक मांगों के लए हड़ताल करें।

गांधीजी उपवास को सत्याग्रह का बहुत प्रभावी साधन मानते हैं। उपवास का उपयोग केवल तभी कया जाना चाहिए जब बिल्कुल आवश्यक हो और सावधानी के साथ इसका उपयोग कया जाना चाहिए । केवल वनय, निष्ठा और अनुशासन वाला व्यक्ति ही उपवास का हकदार है। अनिवार्य रूप से उपवास करने से आत्महत्या होती है। ले कन यह करुणा के साथ दिल-दहलाने वाले इस्मात को भी तरसा सकता है। बेशक, उपवास के पीछे कोई स्वार्थी साजिश नहीं होनी चाहिए। गांधीजी के अनुसार, मरते दम तक उपवास में कोई समस्या नहीं है।

बहिष्कार की तकनीक का उपयोग राजनीतिक और सामाजिक दोनों तकनीकों में कया जा सकता है। बहिष्कार को सार्वजनिक भावना का अपमान करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। ऐसे लोगों को सहयोग नहीं करना चाहिए। एक बहिष्कार प्रतिद्वंद्वी को अपने कदाचार का अंदाजा दे सकता है। इस लए वह सही रास्ते पर आ सकता है। हिंसा या जबरदस्ती से कोई बहिष्कार नहीं होना चाहिए। इसी वचार के साथ भारतीयों ने वदेशी वस्तुओं का बहिष्कार कया है। जहाँ लोगों के साथ घोर अन्याय और अत्याचार होता है, उनकी कोई गरिमा, कोई सुरक्षा नहीं है, जहाँ अहिंसात्मक तरीकों से वरोध नहीं कया जा सकता है, तो लोगों को इस क्षेत्र को छोड़ देना चाहिए। हिंसा से भी बचना चाहिए। गांधीजी ने बारडोली, जूनागढ़, व लगढ़ के लोगों को यही सलाह दी थी। धारण की तकनीक का उपयोग समाज में कलं कत व्यक्ति को श र्मंदा करने के लए कया जा सकता है। हालां क, इसे अपनाते समय, कसी को हिंसक रास्ता नहीं अपनाना चाहिए। दबाव, धमकी, आगजनी या घेराबंदी जैसी चीजों को उम्र माना जाना चाहिए। गांधीजी के अनुसार, सत्याग्रह का उपयोग स्थानीय लोगों और वदे शयों दोनों के लए कया जा सकता है। सत्याग्रह आक्रामकता का वरोध करने के लए भी उपयोगी है।

निष्कर्ष:

अध्ययन में पाया गया क जहां एक ओर अपराध, हिंसा,दुराचार बढ़ रहा है। वही गांधीजीके वचार इन बुराइसे लड़नेमे कारगर सद्ध हो रहे है। गांधीजी की करुणा और निस्वार्थ सेवा आज दुनिया के लए अ धक महत्वपूर्ण है। बैरिस्टर होने के बावजूद, उन्होंने एक साधारण भारतीय के रूप में कपड़े पहने। व्यक्तिगत जीवन में, एक व्यक्ति को वनम्र, आत्मनिर्भर होना चाहिए ये वचार हमेशा महत्वपूर्ण होंगे। गांधीजी ने हमेशा सरल जीवन और उच्च सोच को पुरस्कृत कया। उन्होंने स्वदेशी के माध्यम से युवाओं को प्रोत्साहित कया। हालाँ क, वर्तमान में, कई युवा लोग पश्चिमी वचारधारा और व्यवहार को अपनाकर गांधीजी को भूल रहे हैं। हमारी पीढ़ी ने गांधी को नहीं देखा है। ले कन, अगर गांधी आज जी वत होते, तो वे पीड़ा में होते। क्यों क नस्लीय और धा र्मक वभाजन उनके लए अस्वीकार्य था। एक ओर, इस गंभीर तस्वीर के बावजूद, देश में कई युवा महिलाएं और पुरुष अहिंसा, सच्चाई और प्रेम के मूल्यों को आगे बढ़ाने के लए दृढ़ हैं।

सत्य के महात्मा गांधी के प्रयोग अभी भी दुनिया के लए निरंतर जिज्ञासा का वषय हैं। वे दुनिया के लए एक निरंतर मार्गदर्शक बने हुये है। महात्मा गांधी हमेशा वपक्ष के पक्ष को समझते थे। महात्मा गांधी अहिंसा और शांति के साथ हर लड़ाई लड़ना पसंद करते थे। गांधीजी ने धर्म पर आस्था को नहीं छोड़ा बल्कि धर्म को व्यापक और अ धक सहिष्णु बनाया। गांधीजी संदेश देते हैं क समाज की समस्याओं को हल करने के लए व्यक्ति को एक संचारी की भू मका निभानी होगी। हम गांधीजी के इन वचारों को स क्रय रूप से लागू करना भूल गए हैं। गांधीजी के वचारों का पालन करने से ही समाज बेहतर होगा। गांधीजी ने 'स्वच्छता और गांव जाओ 'का नारा दिया था। हालां क, हम इन चीजों को नजरअंदाज कर रहे हैं। देश में वर्तमान राजनीतिक और सामाजिक स्थिति में, महात्मा गांधी के वचारों की बहुत आवश्यकता है। गांधीजी के वचारों को युवाओं में वक सत करने की आवश्यकता है। गांधीजी के वचारों का कार्यान्वयन वर्तमान वैश्विक स्थिति में आवश्यक प्रतीत होता है। उन्होंने पहली बार दिखाया क सत्याग्रह के माध्यम से सफलता प्राप्त की जा सकती है।

सुझाव:

1) हम सभी को गांधीजी के वचारों को व्यवहार में लाने का संकल्प करना चाहिए।
2) आज युवाओं में गांधीजी के वचारों को फैलाने की आवश्यकता है।
3) सत्याग्रह सार्वजनिक हित के लए कया जाना चाहिए न क व्यक्तिगत लाभ के लए।
4) जिनके साथ अन्याय हुआ है, उन्हें भी सत्याग्रह में स क्रय भाग लेना चाहिए।
5) सत्याग्रह में धर्म, जाति या लंग के आधार पर भेदभाव नहीं होना चाहिए। सत्याग्रह के माध्यम से लोगों को प्रबुद्ध और श क्षत कया जाना चाहिए।
6) समाज मे दबाव, धमकी, आगजनी या घेराबंदी जैसी चीजों को उम्र माना जाना चाहिए।

ग्रंथ सूची:

1) कुमार, बी. अरूण, गाँधीयन प्रोटेस्ट, रावत पब्लिकेशंस, जयपुर, **2008**
2) दाधीच, नरेश **(**सम्पादित**),** टुवर्डस् ए मोर पीसफुल वर्ल्ड **:** इन्टरनेशनल एण्ड इन्डियन परस्पेक्टिव, आलेख पब्लिशर्स, जयपुर, **2004**

3) मश्रा, ए.डी. एवं नारायानासामी एस., वर्ल्ड क्राई सस एण्ड द गाँधीयन वे. कॉनसेप्ट पब्लि शंग कम्पनी, नई दिल्ली, **2009**

4) संह, रामजी, गाँधी और भावी वश्व व्यवस्था, कामनवेल्थ पब्लिशर्स, नई दिल्ली, **2000**

5) दास, रतन, द ग्लोबल वशन ऑफ महात्मा गाँधी, सरूप एण्ड सन्स, नई दिल्ली, **2005**

6) इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त वश्व वद्यालय की पुस्तकें

समाचार पत्र: नवभारत, लोकमत, टाइम्स ऑफ इं डया

वेबसाइट:

- ***https://www.drishtiias.com/hindi/loksabha-rajyasabha-discussions/mahatma-gandhi***
- ***https://www.pravakta.com/today-the-relevance-of-gandhian-philosophy/***
- ***https://www.jagran.com/blogs/pawankumararvind/***
- ***https://navbharattimes.indiatimes.com/-/articleshow/6642666.cms***
- ***https://www.bbc.com/hindi/entertainment/story/2007/01/070124_satyagrah_relevance***